जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(केन्द्रीय विशवविद्यालय)
मौलाना मोहम्मद अली जौहर मार्ग, नई दिल्ली-११००२५

JAMIA MILLIA ISLAMIA
(Central University)
Maulana Mohammad Ali Jauhar Marg, New Delhi-110025
(NAAC Accredited "A++" Grade)

جامعہ ملیہ اسلامیہ
(مرکزی یونیورسٹی)
مولانا محمد علی جوہر مارگ، نئی دہلی۔۱۱۰۰۲۵

Tel. : 011 - 26984650, 26985180, Fax : 0091-11-26981232 | Email: vc@jmi.ac.in | Web: jmi.ac.in

प्रोफेसर नजमा अख़्तर
कुलपति

Professor Najma Akhtar
Vice Chancellor

پروفیسر نجمہ اختر
شیخ الجامعہ

संदेश

हिन्दी दिवस के इस अवसर पर आप सब को हार्दिक शुभकामनाएं। हिन्दी दिवस का हम सभी लोगों के लिए खास महत्त्व है। भारत अनेक भाषाओं की भूमि है। यहां अलग-अलग समुदाय के लोग रहते हैं, जो अपनी-अपनी भाषाएं बोलते हैं। हिन्दी उन सभी लोगों को जोड़ने वाली भाषा है। इसलिए इसे कई लोगों ने राष्ट्रभाषा भी कहा है। महात्मा गांधी भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्वाभाविक दावेदार मानते थे। महात्मा गांधी उन लोगों में सबसे आगे थे जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी, फिर भी उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया।

हिन्दी के गौरवशाली इतिहास की झलक हमें स्वाधीनता आंदोलन में दिखाई देती हैं, जहां हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वराज के साथ-साथ स्वभाषा की धारणा पर भी बल दिया। उनके लिए भाषा का प्रश्न आत्म सम्मान और अभिमान से जुड़ा हुआ था। इसलिए स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी राष्ट्रभाषा के एक प्रतीक के रूप में उभरी। इन लोगों ने हिन्दी को सिर्फ नारों तक सीमित नहीं रखा था, बल्कि भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सस्थाओं की स्थापना की और अहिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी सिखाने का बीड़ा उठाया। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस दिशा में सराहनीय काम किया।

14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने इन अनगिनत प्रयासों का सम्मान करते हुए हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता दी। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक में राजभाषा संबंधी प्रावधान दिए गए हैं। आप सभी जानते हैं कि संविधान सभा केइसी निर्णय के महत्व को बतानेऔर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस मनाया जाता है। देश भर में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दी सप्ताह और हिन्दी पखवाड़ा के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इनमें हिन्दी भाषी लोगों के साथ-साथ गैर हिन्दी भाषी लोग भी बड़े पैमाने पर भाग लेते हैं। देश भर में हिन्दी के प्रति यह लगाव हिन्दी भाषा की लोकप्रियता को दर्शाता है।

आज हिन्दी पूरे भारत में बोली और समझी जाने वाली भाषा है। देश के बाहर भी भारत सरकार और विश्व हिन्दी सचिवालय के प्रयासों से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है। दुनिया के जाने-माने विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। प्रवासी भारतीयों का भी विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान रहा है। वे जब देश से बाहर गए तो अपने साथ-साथ अपनी हिन्दी भाषा भी ले गए और वहाँ इसका चहुँमुखीविकास किया।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में ऐसे अनाम लोगों का सराहनीय योगदान है, जिन्होंने निस्वार्थ भाव से अपनी भाषा की सेवा की। लेकिन अब भी यह काम पूरा नहीं हुआ है। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जहां आज भी हिन्दी को आगे बढ़ाने का काम करना है। प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य आदि ऐसे क्षेत्र हैं, जहां आज भी हिन्दी के विकास की जरूरत है। हिन्दी एक समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत की भाषा है, जिस पर सभी को उचित गर्व होना चाहिए।

आज का दिन हिन्दी की उस गौरवशाली परंपरा को याद करने का दिन है, जिसने हमारे देश को एकसूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण काम किया। हिन्दी की वह समावेशी परंपरा हमारे भविष्य का रास्ता दिखाने वाली परंपरा है। मुझे विश्वास है कि उस समृद्ध परंपरा पर चल कर हम बेहतर समाज का निर्माण कर पाएंगे। एक बार फिर आप सब को हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

नजमा अख्तर

(प्रो नजमा अख़्तर)